₹ 5/

तुबारि

www.pangi.in
अब अंग्रेजी, हिन्दी त पंगवाड़ी भाषा अन्तर असी।

Issue 75; 05/06/2018

बिषय सूची

की कई भुए काग टुठे	1
गर्भ गीता	2
जंगल: हें बेश किमती सम्पति भुओ	3
रोटिएटु धाम	3
हें पृथी	4

तुस बुन्ह दुतो नम्बर बठ फोन कइ सकते त अकाशवाणी जे बोक कइ सकते। तुस अपु मनपसन घीते शुण सकते। होर तुस अपु समाचार बी दी सकते,

AIR SHIMLA- 0177 2808152

धाणि त **तसे जुएली** केआं अब सते बंटी अठ फेरे लवाण चाहिए। सत फेरे तेके व्याहे, आठु जे फेरा असा, से कुई जे लवाण चहिए कि से कुई बचाते त तेस पढ़ान्ते ।

की कइ भुए काग टुठे?

यक टेमी बोक भो। यक ऋखिए, यक काग अमृत हेरण जे लंघा। तेन तेस काग जे ई बी बोलु कि तु सद अमृत हेर कइ अईए, ना कि तेस पीण दे। ना त तेसे बुरा फल मेता। कागे तिएरी गा त ऋखि जोई आ बिश की त हच्छा काग तेठया उडार दी कइ नशा।

यक साल तकर तेन अमृत तोपा। तोउं तेस अमृत मेआ। से तेस पीणे लालच रोकी ना बटा, त तेस पी गा। ऋखिए तेस काग जे सक्त मना किओ थी। तेस पीण जे ना करो थी। तोउं बि तेन तीं कर कइ ऋखिए दे दुतो वचन टोड़ छा।

पींण कियां बाद तेस ती दुख लगा। से तधौरा आ। त तेन ऋखिए जे सोब बोक लाई छेई। ऋखिए ई शुणु त से तेस जे तैशी गा त काग शराप दी छा। तेन तेस जे बोलु, "तेईं अपु जुठि टुंगि बइ शुचा अमृत जुठा कइ छा त ए जुठा भोई गा। तोउं त आज कियां बाद सोब मेहणु तोउ हेर लेहेर एतीं। सोबी पखुरु बुच यक तोउ सोब जे कुस्तुरी नजर जोई हेरते। केसे अशुभ पखुरु ई सम्हाई मेहणु तें फुल बणाते। ईं अमृत पिया, तोउं त तें मोत ना भुन्ति, होर ना तोउ बमारी लगती, ना त तु बुढा भुंता भाद्रो महेन शोण रोज पतर के यादि अंतर तोउ ईज्जत मेती। तु कुमोति मरता। अतु बोल कइ ऋखिए से अपु कमेडुरु टुठे पोण अंतर चुसा। त काग टुठा भुआ त तठिअ उडीर गा।

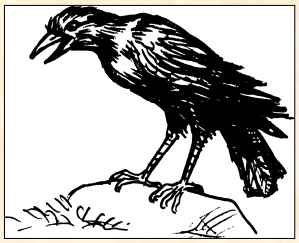

स्वच्छता मंत्र

हें भेणि ई देदी बचेरी पहेला कति मुस्बित भुतिथ। तेन्हि वहेर छठ बशण जे घेण एतुंथ, जेसे बेलि कि तेन्हि कंउ छेड़तेथ त गेर्मी टेम त किड़ि के बि डर भुंतुथ। अब हर घर टेटि बणो असी। सोभि के मां भेणि के ईजत रेहि त पुरा देश बि साफ त सुथरा भुंण लगा किस कि अब सोभ जे टेटि अन्तर छठ बशण जे घेंते। विनोद कुमार

खास दन

12 मिन्धलेयात्रा
14 लेहु धनीस लुज असु।

तुबारि पत्रिके अन्तर छपो सोबी लेख, त कथा अन्तर भुओ विचार सिर्फ लेखके भो। तुबारि पत्रिके एसे कोई जिम्मेबारी नेई। तुबारि पत्रिका सिर्फ भाषा सुहलियत करण जे यक मंच देण लगो असी।

गर्भ गीता

श्री कृष्ण भगवान जी का वचन है जो प्राणी इस गर्भ गीता का विचार करता है। वह पुरूष फिर दुवारा गर्भ में नही जाता है। अर्जुन वचनः हे भगवान! यह प्राणी गर्भ विषय किस दोष कर आता है। हे प्रभु जीए, जब जन्मता है तब इसको जरा आदि रोग लगते है। फिर मरता है! हे स्वामी !यह कौन कर्म है, जिसके करने से जन्म मरने से रहित होते है? भगवाने वचनः अर्जुना, ए जे महेणू असे ना, ए अना त जगरा असे। त ए संसारे प्रकृति जे दिल खारु लगतु त तेस एइए चंता भुंती की सोब चीजे मोउंए मेओ लोती, मोउंए ही मेओ लोती। ए चतां एस महेणू मन किंया निसती ही नाउ। आठो पहेर धन दोलत मगता रहेता। इ बोके कइ कइ से घेडी घेडी जमता त मरता। गर्भ विषय दुख पंता।
अर्जुनः हे श्री केशव जी, मदमस्त हेथी ई असा टिश। से सुआ ताकतवर असा। अगर मन इन्ही पन्झो जिसमें इच्छा, गुस्सा, लालच, मोह, घमण्ड, ए पांन्झो बिचा घमण्ड बोडा भो। कोउ तारिका असा की मन वश अन्तर भोल? भगवाने वचनः अर्जुना, ए मन पकु हेथी ई असा, होर टिश इसे ताकत भो। अगर मन इन्ही पन्झो कम, गुस्सा, लालच, मोह, घ ामण्ड, ए पांन्झो अहांकार अन्ही अंतर मोटा असा। शुण अर्जुना, जीं हथी अंकुशे वश अन्तर भुंता, तिहांणी मने रूपी हेथी वश अन्तर करण जे ज्ञाने रूपी अंकुश भो। अहांकार करणे बेली जीव नर्क घेन्ता।
अर्जनः हे मधुसूदन, यक तें नाउ जे जंगली अन्तर हंटते त यक सेधु असे, यक धर्म कते। अंके विषय कि जाणु की बैष्णव कोउं भो?
भगवानः यक में नाउ बठ जंगली अन्तर हंटते से संन्यासी बोलींता। यक मगरी बठ जैठेई बांधता, यक पटास लांता अन्ही अंतर अउं नेई, किस कि अन्ही अहांकार असा त अन्ही अउं अपु दर्शन बी ना देन्ता।
अर्जुनः हे केशवा! से कोउं पाप भो जेसे बेली जिल्हेण मर घेन्ती, जेसे करण बेली कुबा बी मर घेन्ता। त नपुन्सकता कोस पापे बेली भुन्ता?
भगवानः हे अर्जुना! जे केसे कियां उधार नेन्ता त बापस न देन्ता एस पापे बेली जिल्हेणु मर घेन्ती त जे केसे होरी अमानत खाई छंता, तेसे कुबा मर घेंता त जे बोता कि तें कम पेहला अउं कता, पर टेम एण बठ से तेसे कम न कता से नंपुसकता भुंता।
अर्जुनः केशवा! कोस पापे बेली मेहणू पुरी उमर बमार भुन्ता त खोतुडु जमता त जिल्हेणू के जनम किस मेता त विलउ केस पाप करणे बेली बणते?
भगवानः हे अर्जुना! जे मेहणू कुई बेचता त जे सेधु त ब्रहामाणी के दोषी भुंता, से बमार भुंता। जे मेहणू विषय विकार जे अराख पीन्ता से टटटू जनम नेन्ता त जे झुठी उगाही देन्ता से जिल्हेणू के जनम नेन्ता त जे खाजें बणाण कियां बाद पेहला अपेप खान्ता, तोउं भगवान जे चढ़न्ता, से बला बणता। जे मेहणू झुठ दान कते से दासी बणती।
अर्जुनः हे भगवान! यक मेहणू धे सुना दुतो असा, केही मेहणू के धे हाथि त घोड़े दुतो असे। तेन्ही कोउं पून करो असे?
भगवानः हे अर्जुन! जेन्ही सुना दान करो असा तेन्ही हाथी घोड़े बाहान मेते। त जे कन्यादान कते से परमेश्वरे सामणी कते से मेहणू के जनम नेन्ते।
अर्जुनः हे भगवान जी, मणदी के अबल चीज तेसे लास भींत। केसेरी गी त धन सम्पति असी। कोउं विद्वान असा, तेन्ही कोउं पुन करो असा
भगवानः हे अर्जुना! जेन अनाज दान करो असु तेसे स्वरूपु अबल असा त जेन केनी विद्या दान करो असी, से विद्वान भुन्ता जेन सेवा करो असी तेस पुत्र दान मेता।
अर्जुनः हे केशव जी, केसे माया जोइ प्रेम भुन्ता, केसे जिल्हेणू जोई, ऐसे कि मथबल भुआ?

भगवानः हे अर्जुना, राजपाठ माया जिल्हेणू सोभ नाशे रूप भींत। में भक्ति नाश न भो।
अर्जुनः हे केशव जी, प्रभु राजपाट विद्या कैस धर्म किंया मेता?
भगवानः हे अर्जुन, जे मेहणू काशी अन्तर घेई कइ कोसे भी कम जे तपस्या ना कता त तेठी मरता से राजा बणता। जे गूरू सेवा कता से विद्वान भुन्ता।
अर्जुनः हे केशव! केसे धन संचोरु मेता त यक पुरी उमिरी नरोगा भुन्ता। त तेन कोउं पुन करो भुन्ता?
भगवानः हे अर्जुन! जेन होरी के कम चलाण लावो भुन्तु, से नरोगा भुन्ता
अर्जुनः हे भगवान केसे जीनि लहू अन्तर खराबी भुन्ता त यक गरीब भुन्ता त कोठी खड़गवायु भुतां कोउं काणे त पंगुल भुन्ते। ए केस पापे बेली भुन्ते त कोई जिल्हेणू मठड़ियारी विधवा भुन्ती, से केस पापे बेली भुन्तू?
भगवानः हे अर्जुन जे हमेशा लेहेर किढ़ता रहेन्ता, तेन्के लेहू खराब भुन्ता त जे उदास बश्ता से गरीब भुन्ता त जे कुकर्मी ब्रहामणी के धे दान देन्ते तेन्ही खड़गवायु भुन्ती त जे मेहणू नागी जिल्हेणू हेरता, गुरु जुएली गलत नजरी जोई हेरता से काणी घेन्ता। जे गोउ बठ लाते बइ देता से लटा त पंगुल भुन्ता। जे जिल्हेणू अपु धाणी छाड़ दी कइ होरी के धाणी जोई उंगती, से मठणयारी विधवा भोई घेन्ती।
अर्जनः हे प्रेभु जी, तुस पारबह्य भीन्त, तुसी जे नमस्ते। अउं तोउ रीश्तेदार मानता। अब अउं तुसी पुरी तरह जोई भगवान मानता। पारबह्य गुरु दिशा कि भुन्ती, छने कई बिने कई तेस तुस मोउं जे बोले।
भगवानः हे धंनजय, तु धन्य असा। त तें इ बोउ बी धन्य असे जेन्के तु ई कुआ असा, जेन गुरु दिक्षा पुछो असी। हे पार्थ, पुरी जगते गुरु जगन्नाथ जे असा, विद्याई गुरु काशी असा, चोरोई वर्णी के गुरु ब्राह्मण असा। ब्रह्मणी के गुरु संन्यासी असा। सन्यासी तेस जे बोते जे सोब कुछ छाड़ दी कइ विषे मन ला, से जगते स्वामी भो। हे पार्थ, तेस बोक ध्यान जोई शुण, की गुरु की भोल जेन सोब इन्द्रयां जितो भोल, जेस संसार भगवाने रुपी केता त जगत कियां उदास भोल। ई गुरु बणाए जे भगवान जाणता भोल। तेसे पुजा सोभी कनारा करे। हे धंनजय, जे गुरु भक्त भुतां से में भी भक्त भुतां। जे प्राणी गुरु सहमाणी में भजन कता, तेसे भजन करण सुफल भुन्ता। जे प्राणी गुरु कियां पिठ फेरता, तस सत ग्रांई जाणे पाप लगता। गुरु विमुख मेहणू हेरण नीच जाति मेहणु के ई असु जी अराखे भंन भुतु तेस अन्तर गंगा जल छाणे बेली अपबितर भोई घेन्तू तिहांणी गुरु विमुख का भजन सदा अपबितर असु। तेसे हाथे देवते भी न नेन्ते। तेसे सोबा कम कोसे कमे नेई। कुतर शूकर खोतुडु काग त किड़े खोटी जुनी असे जे गुरु धरण न कता। गुरु बजन मुक्ति नेइ। गुरु दिक्षा बजन प्राणी के सोब कम खराब असे। हे पार्थ, चोरु वर्णा अन्तर में भक्ति त सेवा करण जोग असी। तेस गुरु धरी कइ सेवा त भक्ति करण जोग असी त सोभी दिरोउइ कियां पवितर असु गंगा माई खारी असी, अर्जन सोभी कमी कियां खारा असा गुरु सेवा। गुरुदिक्षा ई बजन प्राणी जनवारी के योनी भोगता त से चौरासी जुनी नेन्ता।
अर्जनः हे श्री कृष्ण जी, गुरुदिक्षा कोस चीजी भुन्ता
भगवानः हे अर्जन तें जनम धन्य असा जेन ए प्रश्न कियो असा। गुरुदिक्षा हरी नाउ असु जे गुरुदेवे उपदेश कते रहन्त. । ए चोरो वर्णी के जपण खरु असु।

।। खतम ।।

विनोद कुमार चौहान

जंगल हे बेश किमती सम्पति भुओ

बोक सुआ साल पेहलकण भुओ, यक बुढा जिम्मदार थिया। से बते ओत पुठ सिओए बुटा लाण लगो थिया। से अतो बुढा त कमजोर थिया कि तसे हथ खुर ठरकण लगो थिए। कुदरती तेस बते बइ राजे रथ निसु। तेन्हि बुढा बुटा लंता कॉऑ त तसे भेड़ पुज कइ पुछु, "ए बाबा जी! तुस त सुआ बुढे भोई गो असे। तुस एस बुटे फल खाई सकते ना, जे तुस अतो लगन जुएई बुटा लाण लगो असे?" बुढे हस कइ जबाव दिता, "ए महाराज, जे बुटे में बॉब-दॉदू लओ थिए, तेन्के फल अउं खांता रेहो असा। इहांणी जे बुटे अउं लाण लगो असा तेन्के फल में कुआ-कुई त पोतुर-पोतीर खाल। जंगल त बुटे समाजे धरोहर भुओ, ए हें बेश किमती सम्पति भुओ।" राजा बुढे बोक शुण कइ खुश भोई गा, त तसे धे सुआ ईनाम दिता।

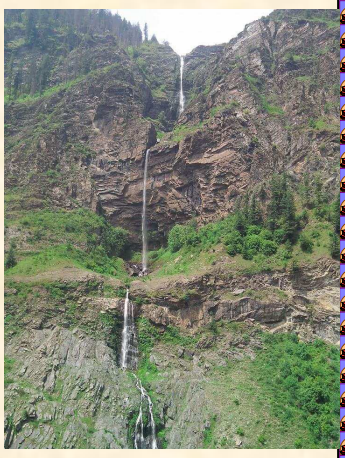

तेस बुढे जिम्मदारे बोके बिल्कुल सच्ची थी। जंगल त बुटे पूरे मानव जाति लिए धरोहर असी। हजारो साल केईया मेहणु के यक पीढ़ी एन्हि होरी पीढ़ी धे देन्ती अओ असी। तोउं त इस पीढ़ी बि इ जिम्मेदारी असा कि एणेबाड़े पीढ़ी लिए जदा केईया जदा एस धरोहर दिएल। हें हर यक ग्रंथ अन्तर बुटे गभुरु बराबर बताओ असे। जीं यक खरा कुवा अपु खरे करमी बई बोउए इज्जत बधान्ता, तिहांणि बुटे बि तेन्हि लाणेबाड़े मेहणु मरण केईया पता केहि टेम तकर यादगार बड़ाई छते। ई बि मानते कि केहि बुटे लाणे बेलि मने कष्ट दूर भोई घेन्ते। आज कले जवाने त बुटी जे नीला सुन्ना बि बोलुण लगो असे। दुहि अन्तर सिर्फ अत फरक असा कि सुन्ना खान अन्तर मेता, त नीला सुन्ना खुली धरती पुठ लगता। बुटी के फाईदे बि सुआ असे। एन्के बेलि ठन्ही ठन्ही ब्यार त मेघे लगती। त बुटी के जड़े बेलि घार न लगती। बुटे केहि रुप अन्तर हें कम एन्ते। बुटे जड़ केईया त पत्ती तकर हें कम एन्ते। अगर बुटे न भोल त हर यक किसमी बीमरी त भुण असी ई असी। पर धरती गरमी बि अत बधी घेण असा, कि बोडे बोडे फाटी पुठ जे डंग केहि सालु केईया जमो असा से बि घुहडी घेण असा। अगर से डंग बि घुहड़ी घियाल, तोउं त तवाहि तवाहि भुण असी। त इस धरती पुठ न मेहणु न जंगली जानवर त न चड़ी चखुरु रेहण असे। तोउं त, अउं तुसी जे हथ जोड़ कइ बोती कि जगाई जगाई बुटे लाण दिए, किस कि धरती कम से कम 30-35 प्रतिशत भाग पुठ बुटे या जंगल भुण जरुरी असा। आज त अस अन्हे बही जुएई बुटे कटण लगो असे। पर बुटे लाणे कोशिश कोई न कता। हॉ यक बोक ईं बि असी कि जेन्हि जंगली या रकबी अस पन्ज साले लिए बन्न कर कइ खरी देखभाल कते। पर फि अपु फाईदे लिए यके रोज अन्तर तेन्हि जंगली तवाह बि कइ छते। पर अस कदी ईं न सोचते कि असी बुटे कटे त लाण बि दियुं। असी कोई सरकरी योजनाईं भाड़ न बिशुण चहिए, किस कि अगर जंगले या बुटी के बेलि सरकारे फाईदा असा त तढ़िया जदा हें अपु फाईदा असा। अगर जंगल न भोल त हें पांगेई डंग बि नेई शिण। डंग न शियाल त पुवॉणी नेई भुण। त बगैर डंगे पणि की लांते बांते। लाल बाल त बगैर मेघे पणि की भोल। त जेईं असी ईं किस न सोचुण कि अपु ग्रांओट या टजोट कर कइ इ फैसला करण कि असी अपु अपफ जगाई जगाई बुटे लाण, ताकि अस हर मुसिबत हर कष्ट केईया बची सकियेल। अगर टेम टेम पुठ डंग शियाल या मेघे लगियेल त हर यक चीज खरी भुन्ती त हें फाईदा बि भुन्ता। तोउं चोहरो कना हेरण जे नीलू नीलू लगतु त चड़ी चखुरु के चु चुआत भुन्ती रेहंती। होर ठन्ही ठन्ही ब्यार लगती त मन अन्तर तसल्ली एई घेन्ती। तोउं न दुख न सांसे बीमरी, किस कि बुटे कटणे बझाई जुएई हें पेंगेई सांसे सुआ बीमारी भुण लगो असी। अगर केसे मैदानी ईलाके मेहणु सांसे बीमारी भोल त डॉक्टर बि बोते पहाड़ी ईलाके जे घिए। अगर अस पहाड़ी ईलाके बाड़े अपु जंगल तवाह करियेल त को घेन्ते? हर यक मेहणु सोचीण दिए! हॉ यक खास बोक असी तुसी बुरी न लोती लगो।

"शेहर बसाई कइ अब ग्रां तोपते मेहणु, कमाल असा बारा हंठते 24 घन्टे हथ अन्तर झोट रख कइ, त फि बि शोलियार तोपते मेहणु।"

बबीता ठाकुर

रोटीएटु धाम

एसे मथलब भुंता कि जिखेई अस शेरे केयां अंपु ढेडुड़ त बकरी चारते, तेसे बंटी अस यक रोज पूरे ग्रांए गभुरु मी कइ धाम मनातेथ। सोब गभुरु मी कइ सोबी के गी घेंते जेंके जेंके ढेडुड़ बकीरी चारो भुंतेथ। तेन्ही केयां उरहां जे घेतेथ त सोबी कियां कुछ कुछ त पाकु घीन ऐंतेथ जीं केसे केयां चाउ, केसे कियां खान, केसे कियां तेल। सोबी कियां मियाई कई तेस दन भारी तेस जोड़ते त दिसाई 4 बज कियां बाद बियादी जे सोभ धेर जोणा बाटा लांते त बिएदी टेम जेन्ही जेन्ही कछ दुतो भुंतु तेंके सोबी के गी याकाक केटो कणा बी पुजांते। त तेन्ही जे बी धाम कते कि तुस बी यक जेई आज बिएदी रोटी खां जे एईए। रोटीएटु के धाम अन्तर सोबी कियां जादे त गभुरु भंते, किस कि तेन्ही टेमी गभुरु सकुली कियां छुटी भुंती त सोब गभुरु उई मी कइ यक होरी साथोट कते कि यक जे ढेडुड ना साम बटता त सोब जे उई मी कइ साथीयोट कते जेसे बेलि कि तेन्ही सोबी जोई मिईणे मोका मेता। धामी तेस बी सोब गभुरु भुंते। ग्रां होरे मोटे मेहणु तेस धाम ना एंते से सद तेंके राई हेरण जे एंते त तेंके नाचुण हेरु जे एंते। से कोई राती1,2 बज तकर नाचते खेलते रेहंते। हेउस भियागे एई कइ राती भाने माजते त जे बचो भुंतु तेस उई मी कइ खांते। तेसे बेलि तेंके यक होरी जोई प्रेम बी बधता।

नाउ विनोद चौहान

तुबारि मासिक पत्रिका

♦अस इ उम्मिद करुं लगो असे कि एण बाड़े रोज अन्तर सुआ मेहणु इस कम अन्तर साथोट देन्ते।

♦इस *तुबारि* मासिक पत्रिका समाचार पत्र एक्ट अन्तर रिजिष्ट्रि नेई भो। सिर्फ पांगी घाटि अन्तर पढ़ुं जे त भाषाई सुहलियत करण जे इ पत्रिका शुरु किओ असी।

♦*तुबारि* यक अवाणिज्यिक पत्रिका भो।

♦*तुबारि* पत्रिका कोई मेहणु, जनजाति, त संस्कृति गलती कढ़ेण जे नेई छपाण लगो। अगर कोई ईं सोचता बि त अस जिम्मेबार नेई।

♦छपाणे पेह्ले सोभ आर्टिकल दुई टाई पांगेई मेहणु हरालो असे। इ त खुली बोक असी कि पेह्लि बार पांगवाड़ि लिखणे सुआ मुशकिल भुन्ति त गलती बि भुन्ति। अगर कोई लिखणे गलती असी त असी जे जरूर बोले। त अस तसे होरे संस्करण पुठ ठीक करणे कोशिश कते।

♦आर्टिकल्स ना मिएल, या घाटि मेहणु के साथोट ना मिएल त *तुबारि* पत्रिका कदी बि बंद भुई सकती।

♦कोई चीज छपाः असी या नेई छपां जे *तुबारि* संपादकीय टीमे पुरा अधिकार असा।

♦अस किलाड़ केन्द्रीय पुस्तकालय, त बजार हरिराम लाले दुकान अन्तर *तुबारि* ड्रॉप बॉक्स पुठ बि अपुं सझाव ओर अर्टिक्लस रखुं जे सुविधा किओ असी।

♦अस सोबी पांगी मेहणु जे हात जोड़ कइ अनुरोध कते कि, तुस बि कोई अछा अर्टिक्ल, पुराणि या नोई कथा, कहावत, कविता, त नोई घीत (पागवाड़ी अन्तर) लिख कइ छपां जे हैंघे दिए।

तुबारि संपादकीय टीम

9418429574

9418329200

हें पृथी

हें पृथी 46 खरब सल पुराणी भोई गओ असी।

सोभी कियां पेहला ईधन कठोण थिया। जंगली कटण कियां बाद मेहणु कोड़े जाअण ले।

तोउं कोड़े बी खत्म भुण लगे तेथ अन्तर पुअणी भरीण लगु।

1769 अन्तर जेम्स वॉटे कम करण लेएख भापी इंजन बणा।

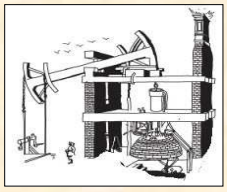

सैम्यूल न्यूकोम्बे तेन्ही खदानी अन्तरा पुअणी भीं कढ़ण जे भापी इंजन बणा।

जहाज केन बड़ा? से दुई भाई बणा। तेन्ही यक कुकर अन्तर सुआ किस्मी लोलुण छाणे त तेंके सिटी अन्तर छड़े। तेन्ही तेस कियां बाद सोचु कि ए कि कइ भोई गोउ तेन्ही तेस कियां बाद यक जहाज बणा तेन्हि से उडारा सोभी कियां पेहला तेन्हि दोही जहाज अन्तर उडार भरी।